

डॉ. क्रेग कीनर, मैथ्यू व्याख्यान 14, मैथ्यू 16-19

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह मैथ्यू की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह मैथ्यू 16-19 पर सत्र 14 है।

मुझे लगता है कि रब्बियों को बैठने की अनुमति देने के बारे में मेरी पिछली टिप्पणी के कारण, उन्होंने मुझे इस सत्र के लिए बैठने की जगह दी है।

अब हम मैथ्यू अध्याय 17 पर आ गए हैं, और हम रूपान्तरण के बारे में बात कर रहे हैं, जहाँ यीशु अपनी महिमा प्रकट करते हैं। उसने अभी-अभी अपने शिष्यों को बताया है कि वह अपने पवित्र स्वर्गदूतों के साथ महिमा के साथ आने वाला है, यह जकर्याह के लिए एक संकेत है कि स्वयं प्रभु परमेश्वर अपने पवित्र लोगों के साथ आ रहे हैं। परन्तु यीशु ने यह भी कहा कि वह उस समय जीवित कुछ लोगों को इसका पूर्वस्वाद देने जा रहा था।

और रूपांतरण में हमारे पास यही है। इस अनुच्छेद में मूसा के लिए और उस समय के लिए कई संकेत हैं जब मूसा सिनाई पर्वत पर टोरा प्राप्त करने के लिए जा रहा था। यीशु एक पहाड़ पर है।

उन्होंने छह दिनों तक प्रतीक्षा की जबकि निर्गमन 24-16 में छह दिनों तक महिमा सिनाई पर थी। एक आवाज है जो कहती है, उसे सुनो। खैर, यह बहुत असामान्य नहीं है।

लेकिन मूसा के संकेतों के संदर्भ में, मुझे व्यवस्थाविवरण अध्याय 18 पर वापस जाना चाहिए क्योंकि लोग मूसा जैसे भविष्यवक्ता की उम्मीद कर रहे थे। इसीलिए एक व्यक्ति ने यहोशू की नकल करने की कोशिश करते हुए यरूशलेम की दीवारों को गिराने की कोशिश की या जॉर्डन के हिस्से को भी यहोशू की नकल करने की कोशिश की। वे नये मूसा की तरह बनना चाहते थे, और वे असफल रहे।

लेकिन यीशु, जिसने जंगल में 5,000 लोगों को खाना खिलाया, वास्तव में उस तरह से मूसा की तरह कार्य करता है। ठीक है, सुनिए वह व्यवस्थाविवरण 18-15 की ओर इशारा कर सकता है, जहां भगवान कहते हैं, मैं तुम्हारे लिए मूसा की तरह एक और भविष्यवक्ता खड़ा करूंगा। उसे तुम सुनोगे।

और यह उस संदर्भ में समझ में आता है जहां मूसा और एलिजा, वह भी थे जो अपने मंत्रालय के कुछ पहलुओं में मूसा को प्रेरित कर रहे थे, जहां मूसा और एलिजा यीशु के साथ हैं, लेकिन यीशु ही वह है जिसे सुनने के लिए उन्हें बुलाया गया है। परमेश्वर की महिमा से मूसा का रूप बदल गया। हमारे पास प्राचीन काल के अन्य वृत्तांत हैं, आम तौर पर ग्रीक मिथक या कभी-कभी कई शताब्दियों पहले के लोगों के बारे में यहूदी किंवदंतियाँ, या सिर्फ बने-बनाए लोग, जो चमकते थे या ज़ीउस की तरह बिजली में बदल गए या ऐसा कुछ।

हमारे पास विभिन्न कहानियों में ऐसे वृत्तांत हैं। लेकिन मैथ्यू के सभी श्रोता, या मैथ्यू के सभी मुख्य श्रोता, किसी भी मामले में, जिस वृत्तांत से परिचित होंगे, वह महिमा से चमकने का बाइबिल वृत्तांत था। और वह पर्वत पर मूसा का वृत्तान्त था।

खैर, परमेश्वर की महिमा से मूसा का रूपान्तर हो गया। यहां, यीशु का रूपांतरित किया गया है, लेकिन पद 3 में यीशु मूसा और एलिय्याह को संबोधित कर रहे हैं। यीशु मूसा से महान हैं। वास्तव में, यीशु वह महिमा है जिसे मूसा ने देखा था।

मैथ्यू इसे आवश्यक रूप से पूर्ण सीमा तक विकसित नहीं करता है जैसा कि आपने जॉन के सुसमाचार में किया है, यहां तक कि प्रस्तावना में भी, जॉन 1:14 से 18 तक, जिसमें बहुत सारे मूसा के संकेत हैं। लेकिन स्पष्ट रूप से, इस परिच्छेद में यीशु मूसा से महान हैं। शिष्य उसे देखते हैं, और फिर वे नीचे आ जाते हैं।

और अगले दृश्य में, हम एक राक्षस को बाहर निकालने के बारे में पढ़ते हैं। दिलचस्प बात यह है कि जो शिष्य पहाड़ पर यीशु के साथ नहीं थे, वे दुष्टात्मा को निकालने की कोशिश कर रहे थे और असफल रहे थे। हालाँकि यीशु ने उन्हें पहले भी भेजा था, वे बीमारों को ठीक कर रहे थे और दुष्टात्माओं को निकाल रहे थे।

इधर, शिष्य इसे बाहर नहीं निकाल सके। और यीशु उन्हें बताते हैं कि ऐसा क्यों है। पद 17 में, वह उन्हें अविश्वासी कहता है।

श्लोक 20, क्योंकि तुम्हारा विश्वास बहुत छोटा है। अब, इसका मतलब यह नहीं है कि हमेशा यही कारण होता है कि कुछ नहीं होता है। मैं जानता हूँ कि मैं और मेरी पत्नी कई बार गर्भपात के दौर से गुजर चुके हैं और मेरा मानना है कि हमारा विश्वास वास्तव में उस समय की तुलना में अधिक मजबूत था जब हमने चमत्कार देखे थे।

लेकिन इस मामले में, वे ऐसा करने में असमर्थ थे क्योंकि उनका विश्वास छोटा था। मार्क इसे प्रार्थनाहीनता से जोड़ता है। मैथ्यू इसे संभवतः प्रार्थनाहीनता के अधिक प्रत्यक्ष परिणाम से जोड़ता है।

लेकिन यीशु बताते हैं कि यदि उनमें राई के बीज जितना भी विश्वास होता, तो वह पहाड़ों को हिला सकता था, जैसे वह पहाड़ जिस पर वह अभी गया था। मुद्दा यह नहीं है कि हमारा विश्वास कितना बड़ा है, क्योंकि उनमें इतना विश्वास होना चाहिए था कि एक पहाड़ को भी हिला सकें, यहाँ तक कि थोड़ा सा विश्वास भी। मुद्दा इतना नहीं है कि हमारी आस्था कितनी बड़ी है।

मुद्दा यह है कि जिस भगवान पर हमारी आस्था है वह कितना बड़ा है। उन्हें यह पहचानना चाहिए था कि वफादार ईश्वर जो यीशु के मंत्रालय में था, यीशु के एजेंट के रूप में उनके साथ था, और फिर भी वे इस बिंदु के लिए तैयार नहीं थे। इस परिच्छेद के बारे में कुछ अतिरिक्त टिप्पणियाँ।

यीशु, जब वह अविश्वास की बात कर रहे हैं, तो वह अविश्वासी और विकृत पीढ़ी की बात करते हैं। उसमें, वह व्यवस्थाविवरण 32, श्लोक 5 की भाषा को उद्धृत कर रहा है, जो इसका ग्रीक

अनुवाद है, जहां जंगल की पीढ़ी एक टेढ़ी-मेढ़ी पीढ़ी थी, जो बहुत ही समान भाषा का उपयोग करती थी। यहां जिस स्थिति का वर्णन किया गया है वह मिर्गी के समान है।

हालाँकि, मैथ्यू 4:24 में मिर्गी और आत्मा के कब्जे को स्पष्ट रूप से अलग किया गया है। सुसमाचारों में, आत्माएँ विभिन्न चीज़ों को प्रभावित कर सकती हैं। यह आत्मा झुकी हुई महिला को प्रभावित कर सकती है, जिसका अर्थ यह नहीं है कि बुरी मुद्रा का यही एकमात्र कारण है, सौभाग्य से मैं ऐसा करता हूँ। आत्माएँ अन्य चीज़ों को प्रभावित कर सकती हैं।

सेना, वह व्यक्ति लगभग पूरी तरह से पराजित हो चुका था। लेकिन इस मामले में, आत्मा तंत्रिका तंत्र को प्रभावित कर सकती है, और इसका उसी प्रकार का प्रभाव हो सकता है जैसे कोई अन्य चीज़ तंत्रिका तंत्र को प्रभावित करती है। तो, इसका मतलब यह नहीं है कि जिस किसी को भी तंत्रिका तंत्र की समस्या है, उसमें एक राक्षस है।

इसका मतलब यह नहीं है कि जिस किसी को झुकने की समस्या है, उसमें एक राक्षस है। लेकिन इन विशेष मामलों में मामला यही था। इसलिए, यह जानने के लिए कि किसी चीज़ का आध्यात्मिक आयाम के साथ-साथ भौतिक आयाम भी है या नहीं, अक्सर आध्यात्मिक विवेक की आवश्यकता होती है।

निःसंदेह, यदि आत्मा बोल रही है और कुछ होने का दावा कर रही है, तो संभवतः वह आपको एक सुराग दे देती है। लेकिन इस मामले में, यह सिर्फ आत्मा थी जो इस तरह से व्यक्ति को प्रभावित कर रही थी, और यीशु ने इसे बाहर निकाल दिया। अब, मेरे पास यहां जो कुछ है, मैं उसमें से बहुत कुछ छोड़ने जा रहा हूँ क्योंकि अगर मैंने अपने परिचय में ऐसा नहीं किया होता तो मैं आत्माओं और आत्मा पर कब्जे के बारे में बात करने जा रहा था।

लेकिन चूंकि मैंने अपने परिचय में ऐसा किया है, इसलिए मैं अध्याय 17 के अंतिम पैराग्राफ पर जा रहा हूँ, जो मंदिर कर के बारे में पैराग्राफ है। किसी ने पतरस से पूछा, अच्छा, क्या तुम्हारा गुरु मन्दिर का कर चुकाता है? सभी वयस्क यहूदी पुरुषों को मंदिर के रखरखाव के लिए आधा शेकेल कर देना पड़ता था। ऐसा सिर्फ यहूदिया और गलील में नहीं था।

वह डायस्पोरा, भूमध्यसागरीय दुनिया में भी था, उस धन का अधिकांश हिस्सा अनिवार्य रूप से बर्बाद हो गया था। मंदिर की इतनी आय थी कि वे बस इस सुनहरी बेल का निर्माण करते रहे, और यह और भी लंबी होती गई, जिससे मंदिर को सजाने के लिए हर साल इस सुनहरी बेल पर अधिक से अधिक शाखाएँ बनाई गईं। खैर, यीशु ने पतरस को बताया कि वास्तव में उसके लिए इसे चुकाना आवश्यक नहीं है क्योंकि, उदाहरण के लिए, एक राजकुमार ग्रामीण परिवार को कर नहीं देगा।

राजकुमार को छूट मिलेगी। खैर, यीशु मंदिर के भगवान के पुत्र हैं, इसलिए तकनीकी रूप से उन्हें छूट मिलनी चाहिए। लेकिन लोगों को लांछित न करने की खातिर, उन्होंने अध्याय 15 में धार्मिक नेताओं को लांछित करने या ठोकर खाने का कारण बनने में कोई आपत्ति नहीं जताई।

वे अहंकारी थे, परन्तु जिन लोगों को ठोकर खाने की आवश्यकता नहीं थी, उन्हें ठोकर न खिलाना पड़े, इस कारण उन्होंने कहा, यह ठीक है, हम इसका मूल्य चुका सकते हैं। खैर, समस्या यह है कि पीटर मछुआरे के रूप में काम नहीं कर रहा है। यीशु बढ़ई का काम नहीं कर रहे हैं।

उन्हें पैसा कहां से मिलेगा? यीशु कहते हैं, ठीक है, तुम कहीं जाओ, तुम्हें एक मछली मिलेगी, और पहली मछली जिसे तुम खींचोगे, यानी, तुम्हें उसके मुँह में एक सिक्का मिलेगा। खैर, संभवतः यीशु के पतरस को यह बताने से पहले ही सिक्का मछली के मुँह में था कि इसे कहाँ से लाना है। ईश्वर संप्रभु है।

भगवान ने इसकी योजना पहले से बना रखी थी। कभी-कभी मछलियाँ सिक्के निगल लेती थीं, और हमारे पास इसकी अन्य कहानियाँ हैं। लेकिन यहाँ दिलचस्प बात यह है कि ध्यान चमत्कार पर उतना नहीं है जितना ध्यान लोगों को ठोकर न खाने देने के लिए परमेश्वर के प्रावधान पर है।

अब, बाद में, हम सीज़र को वह प्रदान करने के बारे में सुनेंगे जो सीज़र का है, करों का भुगतान करना, ये सभी चीज़ें करने की आवश्यकता है। भले ही हम कोई तर्क दे सकें, तकनीकी रूप से हमें इससे या उससे छूट मिलनी चाहिए। हम समाज के भीतर रहते हैं, और हम जितना संभव हो सके समाज का सम्मान करना चाहते हैं और जहां भी संभव हो सके उसके भीतर काम करना चाहते हैं।

इसलिए, मैं अब अधिनियम 18 से 22 की ओर बढ़ रहा हूँ, और फिर से मैं कुछ पर ध्यान केंद्रित कर रहा हूँ, मैं दूसरों की तुलना में कुछ विवरणों पर अधिक ध्यान केंद्रित करने जा रहा हूँ क्योंकि आप शुरू से ही देख चुके हैं कि हम नहीं करते हैं वास्तव में प्रत्येक अनुच्छेद पर उतना ही ध्यान केंद्रित करें अन्यथा इसमें हमें काफी समय लगेगा। वास्तव में, हम इससे भी अधिक गहराई तक जा सकते हैं और ग्रीक क्रियाओं आदि पर बहस में पड़ सकते हैं, लेकिन यह इससे अलग तरह का कोर्स होगा। मैथ्यू 18, हमारे पास यीशु का एक और प्रवचन है।

यह छोटे प्रवचनों में से एक है, और यह राज्य में रिश्तों को संबोधित करता है। अध्याय 18, श्लोक 1 से 5, राज्य में प्रवेश करने के लिए आवश्यक विनम्रता और प्रवेश के लिए आवश्यक ईश्वर पर निर्भरता से संबंधित है। तो, एक तरह से, यह विनम्रता की बात करता है।

लेकिन अध्याय 18, श्लोक 6 से 10 में, यह नम्र लोगों को ठोकर खाने के बारे में बात करता है। अर्थात्, ऐसे लोगों को लांछित करना या उन्हें ठोकर खिलाना जो अभी नए विश्वासी हैं या अपने विश्वास में युवा हैं। वे उत्साही हो सकते हैं, लेकिन वे अभी तक बहुत कुछ नहीं जानते हैं।

धिक्कार है उन पर जो उन्हें ठोकर खिलाते हैं। हमें उनका पालन-पोषण करने की जरूरत है।' श्लोक 12 से 14, खोई हुई भेड़ के पीछे जाओ।

यदि कोई लड़खड़ाता है, तो तुम उसके पीछे जाओ। आप बस यह मत कहिए, ठीक है, हम किसी और को ले लेंगे। और आपके पास ल्यूक अध्याय 15 में एक समान कहानी है, लेकिन यहां आवेदन अलग है।

संदर्भ अलग है। श्लोक 15 से 20, जब बाकी सब विफल हो जाता है, कभी-कभी, भले ही आप लोगों को अंदर लाना चाहते हों, संदर्भ का पूरा ध्यान इसी पर होता है, कभी-कभी चर्च अनुशासन आवश्यक होता है। आप नहीं चाहते कि कोई व्यक्ति राज्य के सिद्धांतों का उल्लंघन करता रहे, सिर्फ इसलिए नहीं कि यह, एक बात के लिए, संक्रामक है, बल्कि दूसरी बात के लिए, आप ऐसा नहीं चाहते क्योंकि आप नहीं चाहते कि बाहरी लोग देखें और कहें, ओह, ईसाई ऐसे ही रहते हैं।

और फिर छंद 21 से 35 में, वह क्षमा पर इस फोकस पर लौटता है और इसका विस्तार से विस्तार करता है, जैसा कि आपने प्रभु की प्रार्थना में कहा है, हमारे ऋणों को क्षमा करें जैसे हम भी उन लोगों को क्षमा करते हैं जो हमारे ऋणी हैं। यह उस विचार को और अधिक विस्तार से बताएगा। अब 18:1 से 5:18, 1 से 5 को देखते हुए, हमें एक बच्चे की तरह निर्भर रहना होगा।

नम्रता एक ऐसी चीज़ थी जिस पर रब्बियों ने ज़ोर दिया था। मैंने पहले ही उस रब्बी की कहानी का उल्लेख किया है जिसने अपनी माँ को अपनी पीठ पर चढ़ने दिया। एक अन्य रब्बी को यकीन था कि वह सही था, और बाकी सभी को भी यकीन था कि वह सही था, लेकिन उसे रब्बन गमालिएल ॥ से माफी मांगनी पड़ी, इसलिए नहीं कि गमालिएल सही था, बल्कि सिर्फ इसलिए कि माफी मांगना सही काम था, अपने आप को नम्र करना।

लेकिन अधिकांश लोग अभी भी रब्बियों को आम लोगों से ऊपर रखते हैं, और हम उस मुद्दे को मैथ्यू 23 में देखेंगे, जहां इसे और अधिक विस्तार से संबोधित किया जाना है। यीशु एक बच्चे का स्वागत करता है। वह एक बच्चे को एक मॉडल के रूप में उपयोग करता है।

आम तौर पर, लोग प्रमुख लोगों को मॉडल के रूप में उपयोग करते हैं, लेकिन यीशु हमें एक अलग दिशा में इंगित करते हैं। सबसे महानतम सबसे छोटा है, और वह विषय उनके शिक्षण में भी आएगा। आप इसे अध्याय 20 में देखेंगे।

भेड़ के पीछे जाने के साथ, एक सौ औसत आकार का झुंड था, और यदि एक चरवाहा भेड़ के पीछे जाता था, और आप इसे ल्यूक अध्याय 15 में भी देखते हैं कि एक चरवाहा खोई हुई भेड़ के पीछे जाता था, तो क्या होता इस बीच अन्य भेड़ें? खैर, चरवाहे अक्सर अन्य चरवाहों के साथ घूमते रहते थे, और उनके झुंड एक साथ मिल जाते थे। आपको ल्यूक अध्याय 2 याद होगा, जिसमें चरवाहों के बारे में बात की गई थी जो रात में अपने झुंडों की रखवाली करते थे। चरवाहे और अन्य चरवाहे एक साथ समय बिताते थे, अक्सर यहूदिया की पहाड़ियों में, और जब उन्हें अपने जानवरों को अलग करने की आवश्यकता होती थी, तो वे कभी-कभी बांसुरी की आवाज़ के साथ ऐसा कर सकते थे, या भेड़ें उनकी आवाज़ जानती थीं।

वे बस उन्हें बुला सकते थे और उन्हें अन्य झुंडों से अलग कर सकते थे। तो, ऐसा नहीं है कि वह जा रहा है, आप जानते हैं, खोई हुई भेड़ की तलाश करने का मतलब है कि दूसरी भेड़ के साथ कुछ गलत होने वाला है। ये तो समझ आ गया होगा।

जब हम श्लोक 15 से 20 तक आते हैं, तो मैं यहां थोड़ा और समय बिताने जा रहा हूँ, क्योंकि कभी-कभी इसकी गलत व्याख्या की जाती है और गलत तरीके से लागू किया जाता है। जब बाकी

सब विफल हो जाता है, तो ठीक है, कभी-कभी आपको उस व्यक्ति के पास जाना पड़ता है और उसे डांटना पड़ता है। उन्हें उनका पाप बताएं।

यह कोई ऐसी चीज़ नहीं है जिसे हम खुशी-खुशी करते हैं। हम याद कर सकते हैं कि पॉल गलातियों 6.1 में क्या कहता है। यदि आप किसी की गलती के लिए उसे सुधारने जाते हैं, तो इसे विनम्रतापूर्वक करें, यह याद रखते हुए कि आपमें भी गलतियाँ हैं, हम सभी को कभी-कभी सुधार की आवश्यकता होती है, और यहूदी ज्ञान इस बात पर जोर देता है कि अच्छे सुधार के लिए प्रस्तुत रहें। हमें इसे सुनने की ज़रूरत है, चाहे यह सही हो या गलत, हम कम से कम इसे सुन सकते हैं, और आमतौर पर, हम इससे सीख सकते हैं।

लेकिन इस मामले में, श्लोक 15 में फटकार की मानक यहूदी प्रथा का पालन किया जाता है। यीशु हमेशा अपनी संस्कृति से असहमत नहीं होते हैं। यहूदी संस्कृति में पहले से ही बहुत ज्ञान था।

इसमें से कुछ सीधे धर्मग्रंथ से आया है जिसे भगवान ने पहले ही प्रकट कर दिया है। इसमें से कुछ मानवीय अनुभव से आया था जो कि सिर्फ ज्ञान पैदा किया गया था। किसी भी मामले में, यह फटकार लगाने की मानक यहूदी प्रथा है, जिसे बाद में रब्बियों द्वारा विस्तृत किया गया।

यह मृत सागर स्कॉल में भी पाया जाता है। किसी और को इसमें शामिल करने से पहले और निश्चित रूप से इसे सार्वजनिक करने से पहले आप उस व्यक्ति के पास निजी तौर पर जाते हैं। इसीलिए यह इतना चौंकाने वाला है कि गलातियों 2 में पॉल कहता है, मैंने सार्वजनिक रूप से सबके सामने पीटर का सामना किया।

आप सामान्यतः विषम परिस्थितियों में ही ऐसा करेंगे। और इसलिए, गलातियों 2 एक चरम परिस्थिति के बारे में बात कर रहा है। जहां तक पॉल का सवाल है, सुसमाचार दांव पर था।

पीटर किसी को भी ठोकर खाने से बचाने की कोशिश कर रहा था, लेकिन पॉल के लिए, यह बहुत महत्वपूर्ण है। जातीय और सांस्कृतिक आधार पर टेबल फ़ेलोशिप सुसमाचार की अखंडता का मामला है। लेकिन किसी भी मामले में, सामान्य परिस्थितियों में, हम किसी व्यक्ति को निजी तौर पर डांटते हैं।

इससे यह सुनिश्चित करने में भी मदद मिलती है कि आप केवल गुस्से में काम नहीं कर रहे हैं। तो, श्लोक 15, आप उनसे अकेले में बात करें। फिर आयत 16 में, यदि वे आपकी बात नहीं सुनते हैं, तो आप किसी को अपने साथ ले जाएं, शायद दो लोगों को अपने साथ ले जाएं, ताकि दो या तीन गवाहों के मुंह में हर बात की पुष्टि हो सके।

अब, रोम द्वारा यहूदिया में मृत्युदंड को समाप्त करने के बाद, फरीसियों ने एक जोर विकसित किया जिसने इसे ऐसा बना दिया, ठीक है, भगवान हमसे किसी भी तरह से मृत्युदंड को निष्पादित करने की उम्मीद नहीं करते हैं, क्योंकि उन्होंने किसी को भी मृत्युदंड देना बहुत कठिन बना दिया है। याद रखें कि मैंने क्या कहा था, आप अंदर आ रहे हैं, आप किसी को खून से सना चाकू लिए हुए पाते हैं, एक ऐसे व्यक्ति के ऊपर खड़ा है जो अभी-अभी मारा गया था, और

आप उस व्यक्ति को कृत्य में नहीं देखते हैं, यह मायने नहीं रखता है। और टोरा के अनुसार भी, आपके पास किसी भी चीज़ के लिए दो या तीन गवाह होने चाहिए, क्योंकि अगर लोगों के पास किसी के खिलाफ कुछ है तो वे कुछ भी बना सकते हैं।

वास्तव में, आपके पास एक यहूदी कहानी भी है, सुज़ाना की कहानी, जहाँ आपके पास दो गवाह थे जिन्होंने इससे बचने के लिए झूठ बोलने की साजिश रची। और यही कारण है कि आपको गवाहों से जिरह करने की आवश्यकता है, और फरीसियों ने इस पर बहुत अधिक जोर दिया, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वास्तव में उनकी कहानी एक ही है। खैर, यहां भी, व्यवस्थाविवरण 17 और व्यवस्थाविवरण 19 से बाइबिल की आवश्यकता का हवाला देते हुए, यीशु कहते हैं, आपके पास गवाह होने चाहिए, क्योंकि यदि आप इसे दूसरे स्तर पर ले जा रहे हैं, तो यह उनके खिलाफ सिर्फ आपका शब्द नहीं हो सकता है।

हमें किसी और को रखना होगा जो, आप जानते हैं, वे सुनने से इनकार कर रहे थे, वे अपने तरीके बदलने से इनकार कर रहे थे। और फिर पद 17 में, यदि वे फिर भी नहीं सुनते हैं, तो आप इसे चर्च के सामने लाएँ, आप इसे विश्वासियों की सभा के सामने लाएँ। आपको याद होगा, उस समय के आराधनालय, अदालतों के रूप में भी काम करते थे, वे सामुदायिक केंद्र थे।

और इसलिए, लोग आराधनालय समुदाय के सामने चीजें लाएंगे, और बुजुर्ग निर्णय लेंगे। उसी तरह, चर्च को भी ऐसा करना होगा। डायस्पोरा में, रोमन कानून रोमन अपराधों से निपटता था।

लेकिन अगर यह स्थानीय यहूदी अपराध था, अगर यह यहूदी कानून के खिलाफ अपराध था, तो रोमन इससे निपटना नहीं चाहते थे। आप गैलियों को अधिनियम 18:12 में बोलते हुए याद कर सकते हैं और उसके बाद, गैलियों डील नहीं करना चाहता, अचिया के गवर्नर प्रोकोन्सल के रूप में, वह उन चीजों से निपटना नहीं चाहता जो यहूदी कानून का उल्लंघन हैं। उन्होंने कहा कि इसका ख्याल आप खुद रखें।

रोमन दुनिया में डायस्पोरा में यहूदी समुदायों को निवासी एलियंस का समुदाय माना जाता था, चाहे वह कोरिंथ में हो या इफिसस में या किसी और जगह में। और उन्हें यहूदी अपराधों से अपने तरीके से निपटने का अधिकार दिया गया। इसीलिए पॉल को पीटा जा सका और पांच बार 39 कोड़े मारे गए।

इससे बाहर निकलने का एकमात्र तरीका यहूदी समुदाय से अलग होना था। लेकिन उन्होंने इसके प्रति समर्पण जारी रखा क्योंकि उन्होंने अपने समुदाय, अपने यहूदी समुदाय के साथ पहचान बनाए रखी। इसलिए, जब तक लोग, यहां तक कि डायस्पोरा में भी, जब तक लोग अपनी यहूदी पहचान बनाए रखते थे, वे यहूदी समुदाय के भीतर यहूदी अनुशासन के अधीन थे।

वैसे तो अनुशासन के विभिन्न स्तर थे, लेकिन सबसे कठोर स्तर था बहिष्कार। और कभी-कभी सज़ा, शाप देने के साथ भी जुड़ा होता है। आप इसे 1 कुरिन्थियों 5:4 और 5 में देख सकते हैं, जहां पॉल कहता है, मैंने ठान लिया है, इस व्यक्ति को शैतान को सौंप दूं।

अध्याय 6, श्लोक 1 से 8 में, अध्याय 5 के विचार को आगे बढ़ाते हुए, पॉल आपके अपने समुदाय के भीतर इन चीजों से निपटने के बारे में बात करता है। अपने गंदे कपड़े दुनिया के सामने मत लाओ। यह एक ऐसा अपराध है जिससे चर्च में निपटा जा सकता है।

पहले चर्च में इससे निपटें। 1 तीमुथियुस 1:20, पॉल भी किसी को शैतान को सौंपने की बात करता है। आपके पास प्राचीन काल में निष्पादन की गोलियाँ हैं।

जाहिर तौर पर आपके पास बहिष्कार का श्राप है। मृत सागर स्कॉल में आपके पास शैतान के विरुद्ध सज़ाएँ हैं। यहूदा की किताब कहती है कि ऐसा मत करो।

लेकिन विचार यह है कि बहिष्कार का सबसे कठोर रूप व्यक्ति को समुदाय से बाहर कर देना था। कुछ लोगों ने कहा है, ओह, यह केवल बाद के रब्बियों में पाया गया है। और अनुशासन के स्तर केवल बाद के रब्बियों में पाए जाते हैं।

खैर, यह सिर्फ दिखाता है कि उन्होंने पर्याप्त रूप से नहीं पढ़ा है, क्योंकि यह मृत सागर स्कॉल में न्यू टेस्टामेंट से पहले ही पाया जा चुका है। मृत सागर स्कॉल में भी, बहिष्कार के विभिन्न स्तर थे। सबसे कठोर व्यक्ति को समुदाय से हमेशा के लिए निष्कासित कर दिया गया।

लेकिन उनमें कुछ कम भी थे, जैसे 30 दिनों के लिए निष्कासित किया जाना, इत्यादि। ठीक है, आप 2 थिस्सलुनिकियों 3, श्लोक 11 से 15 को देखें। यह अलग है।

उस व्यक्ति के साथ भोजन न करें, लेकिन फिर भी उनके साथ भाई जैसा व्यवहार करें। यहां उनके साथ टैक्स-कैथेटर और गैर-यहूदी की तरह व्यवहार न करें। इसलिए, बहिष्कार के विभिन्न स्तर थे।

आज चर्च अनुशासन के विभिन्न स्तर हैं। सभी समान रूप से गंभीर नहीं हैं। ठीक है, फिर यीशु कहते हैं, श्लोक 18 में, मैं तुम्हें सच बताता हूँ, आमीन, लेगो गृहिणी .

जो कुछ तुम पृथ्वी पर बाँधोगे वह स्वर्ग में बाँधा जाएगा। जो कुछ तुम पृथ्वी पर खोओगे वह स्वर्ग में खोया जाएगा। इस बात पर कुछ बहस चल रही है कि हमें यहां क्रिया काल को कितनी दूर तक दबाना चाहिए।

लेकिन अगर हम उन्हें जितना संभव हो सके दबाते हैं, और फिर, आप हमेशा ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि लोग हमेशा क्रिया काल का उपयोग उस तरह नहीं करते हैं जिस तरह हम ग्रीक में करते हैं। लेकिन किसी भी मामले में, यदि आप उन्हें जितना संभव हो उतना दबा सकते हैं, यीशु कह रहे हैं, जो कुछ भी आप पृथ्वी पर बांधेंगे वह पहले से ही स्वर्ग में बंधा हुआ होगा। जो कुछ भी तुम पृथ्वी पर खोओगे वह पहले ही स्वर्ग में खो चुका होगा।

दूसरे शब्दों में, जब आप इन प्रक्रियाओं का पालन करते हैं तो आप बस स्वर्ग के अधिकार पर कार्य कर रहे होते हैं। बंधना और खोना का क्या मतलब है? क्या वह राक्षसों को बांधने की बात कर रहा है? हमने इसके बारे में पहले अध्याय 12, श्लोक 29 में बात की थी। क्या वह राक्षसों को

बांधने के बारे में बात कर रहा है? या क्या वह मानव शैतानों को बांधने की बात कर रहा है? वह अनुशासन, चर्च अनुशासन के बारे में बात कर रहा है।

और पिछला संदर्भ चर्च अनुशासन है। और यदि हमें अन्यथा नहीं सिखाया गया होता, तो सामान्यतः किसी को शाब्दिक रूप से बाँधने का क्या अर्थ होता? खैर, इसका मतलब होगा उन्हें बांधना। उन्हें खोना उन्हें जाने देना होगा।

जोसेफस लोगों को बांधने और खोने के बारे में बात करता है, और बैरी लोगों को कैद करने और लोगों को रिहा करने के बारे में बात करता है। तो यहाँ, यह संभवतः अभी भी लोगों को अनुशासित करने या उन्हें उससे मुक्त करने के संदर्भ में चर्च अनुशासन के बारे में बात कर रहा है। श्लोक 15 से 20 तक का संदर्भ, और वास्तव में पूरा अध्याय, रिशतों का संदर्भ है।

यदि तुम्हारा भाई या बहन तुम्हारे विरुद्ध पाप करता है, तो तुम जाओ, तुम दोनों के बीच में ही उन्हें अपना दोष दिखाओ। अगर वे सुनते हैं, तो यह अद्भुत है। आपने उन्हें जीत लिया है।

यदि वे न सुनें तो एक या दो अन्य लोगों को साथ ले लें ताकि प्रत्येक मामला दो या तीन गवाहों की गवाही से सिद्ध हो जाए। खैर, और फिर आप इन छंदों पर आते हैं। जो कुछ तुम पृथ्वी पर बांधोगे वह स्वर्ग में बंधेगा।

यदि पृथ्वी पर तुममें से दो लोग किसी बात पर सहमत हों, जहाँ दो या तीन एक साथ आते हैं, तो ठीक है, वे दो या तीन कौन हैं? ये वही दो या तीन होंगे जिनका उल्लेख पिछले संदर्भ में किया गया है, दो या तीन गवाह। तो, संदर्भ के प्रवाह में, और दो या तीन की निरंतरता को देखते हुए, यह बिल्कुल स्पष्ट लगता है कि वह अभी भी चर्च अनुशासन के बारे में बात कर रहा है। अब, दो या तीन गवाह व्यवस्थाविवरण 17, छंद 6 और 7 पर वापस जाते हैं। गवाहों को सबसे पहले व्यक्ति पर पथराव करना चाहिए।

यहाँ ऐसा प्रतीत होता है कि गवाहों को सबसे पहले प्रार्थना करनी चाहिए। इसलिए कभी-कभी हमें चर्च अनुशासन का पालन करने के लिए मजबूर होना पड़ता है। केवल एक बार, जब मैं एक पादरी था, क्या हमें कभी इसे करने के करीब आना पड़ा, और हमें इसे करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी।

यह बहुत ही अंतिम उपाय है। उस मामले में, हममें से बाकी लोगों का मानना था कि यह गपशप और बदनामी है। लेकिन वे चरम स्थितियाँ हैं।

यदि संभव हो तो आप इन प्रक्रियाओं से गुज़रकर, निजी तौर पर उस व्यक्ति के पास जाकर और दूसरों को अपने साथ लेकर उनसे बचने का प्रयास करें। और सिर्फ इसलिए कि आपकी असहमति है, इसका मतलब यह नहीं है कि आपको चर्च का अनुशासन रखना होगा। लेकिन अगर यह कुछ गंभीर है, तो यह करना ही होगा।'

हालाँकि, ध्यान रखें कि कुरिन्थ में बहुत से लोग पाप कर रहे थे। पॉल ने केवल सबसे चरम मामलों को ही अनुशासित किया। अतः आप इसे आवश्यकता से अधिक न करें।

मैं विभिन्न प्रकार के चर्चों में रहा हूँ। जिस मंडली में मैं पादरी था, लोग, मेरा मानना है कि सभी लोग प्रभु का अनुसरण कर रहे थे। जहाँ तक मैं बता सकता हूँ, वे सभी आस्तिक थे।

लेकिन मैं कुछ मंडलियों में सहयोगी पादरी रहा हूँ। उनमें से कुछ वास्तव में प्रभु के लिए प्रेरित थे, लेकिन कहीं-कहीं ऐसे लोग भी थे जो मुक्ति के मार्ग को नहीं समझते थे, भले ही हमने इसे तब तक समझाया जब तक हमने उन्हें व्यक्तिगत रूप से नहीं समझाया। जहाँ मैं था वहाँ एक मण्डली थी, जहाँ से आते समय वरिष्ठ पादरी ने मुझे बताया कि शायद आधे लोग अनैतिक जीवन शैली जी रहे थे।

और वहाँ मैंने अपनी भूमिका को और अधिक देखा, वाह, यह तो बहुत बढ़िया है। मैं सड़कों पर प्रचार करता हूँ, अब मैं इसे सीधे चर्च में कर सकता हूँ। लेकिन किसी भी मामले में, हमारे पास विभिन्न प्रकार की सेटिंग्स हैं।

लेकिन श्लोक 20 में, यीशु दो या तीन प्रार्थनाओं के बारे में बात कर रहे हैं। और इसका मतलब यह नहीं है कि जब तक आपके साथ प्रार्थना करने के लिए कोई और न हो, भगवान आपकी प्रार्थना नहीं सुनेंगे। लेकिन फिर, यह उन दो या तीन गवाहों के बारे में बात कर रहा है जिन्हें उसने अभी संबोधित किया है।

परन्तु वह कहता है, जहाँ दो या तीन हों और वे प्रार्थना करें, अच्छा, मैं उनके बीच में हूँ। शकीना के बारे में, भगवान की उपस्थिति के बारे में, ऐसी ही एक रब्बी कहावत थी। जहाँ दो या तीन टोरा के अध्ययन के लिए एकत्र होते हैं, वहाँ भगवान की शकीना, उनके बीच उनकी उपस्थिति होती है।

और हमने पहले पाठ्यक्रम में इसका उल्लेख किया था, कि यह केवल ईश्वर की विशेषता है। बाद में रब्बियों ने उसे माकोम कहा, वह स्थान, सर्वव्यापी, सेप्टुआजेंट और फिलो बताते हैं कि कैसे ईश्वर पूरी सृष्टि को भरता है। और फिर, यह एक ऐसा विषय है जो हमारे पास मैथ्यू में कहीं और है।

मत्ती 1:23, इमैनुएल, परमेश्वर हमारे साथ है। मत्ती 28:20, मैं युग के अंत तक तुम्हारे साथ हूँ। यहाँ यीशु को स्पष्ट रूप से दिव्य के रूप में चित्रित किया गया है।

खैर, यीशु चर्च अनुशासन के बारे में बात कर रहे हैं। और पतरस इसलिए प्रश्न पूछता है, अच्छा, मुझे कितनी बार क्षमा करना चाहिए? सात। और निःसंदेह, उसने सोचा कि यह बहुत उदारता है क्योंकि कुछ बार क्षमा करना भी उदार माना जाता था।

और सात बार, वह सामान्य से कहीं अधिक उदार था। परन्तु यीशु ने कहा, 70 गुणा सात। इसका मतलब यह नहीं है कि आप 490 तक गिनें और फिर क्षमा करना छोड़ दें।

मुद्दा यह है कि, पीटर ने सात कहा है, मुद्दा यह है, ठीक है, यह उससे कहीं अधिक है। यदि व्यक्ति पश्चाताप करता रहे तो हम उसे क्षमा करते रह सकते हैं। हालाँकि यहूदी शिक्षकों ने इस

बात पर ध्यान दिया कि यदि कोई यह कहता रहे कि उन्होंने पश्चाताप किया है और वही काम दोबारा करता रहता है, तो संभवतः पश्चाताप बहुत गहरा नहीं था।

लेकिन किसी भी मामले में, हम दूसरे लोगों के न्यायाधीश होने का बोझ नहीं उठाते हैं। हमें वह बोझ उठाने की जरूरत नहीं है. वह बोझ भगवान का है.

हम इसे जाने दे सकते हैं. हम लोगों को माफ कर सकते हैं और जहां संभव हो हम रिश्तों को बहाल कर सकते हैं। और मुझे ऐसा कई बार करना पड़ा है, मैं आपको पहले एक उदाहरण देता हूँ।

लेकिन यह बहुत बेहतर है. हमें वह बोझ अपने साथ नहीं रखना है। किसी भी स्थिति में, राजा ने 18:23 में यहां अपने सेवकों के साथ हिसाब-किताब तय किया।

कई यहूदी दृष्टान्तों में ईश्वर को एक राजा के रूप में वर्णित किया गया है, और यह समझ में आता है। परन्तु यहाँ का राजा यहूदी राजा नहीं है। यहां की सेटिंग यहूदी सेटिंग नहीं है, लेकिन यह ऐसी सेटिंग हो सकती है जिसके बारे में यीशु ने सुना होगा और वह परिचित होगा।

यह उस प्रकार की सेटिंग है जिसके तहत यहूदी लोग मिस्र के पास के अलेक्जेंड्रिया में रहते थे। पहले की अवधि के दौरान जब टॉलेमिक शासक था, यह शासक सालाना अपने कर किसानों, उन लोगों के साथ लेखा-जोखा रखता था जो बाहर जाते थे और उसके लिए कर एकत्र करते थे। वे पहले पैसा जमा करेंगे, और फिर उन्हें करों से पैसा वापस मिल जाएगा।

इस तरह वह कुछ भी नहीं खोएगा। लेकिन इस मामले में, उसने कुछ खो दिया है। वे लाभ पर कर एकत्र कर सकते थे, लेकिन बेहतर होगा कि वे राजा को बकाया राशि का भुगतान करें।

खैर, खराब फसल के बाद, यदि नील नदी में पर्याप्त बाढ़ नहीं आई या बहुत अधिक बाढ़ आई, तो नील नदी के आसपास सामान्य रूप से उपजाऊ मिट्टी उतना सहन नहीं कर पाई, और खराब फसल, खराब कर का मौसम। यह अपने आप में मिस्र नहीं हो सकता है, लेकिन यह इसके लिए निकटतम संभावित काल्पनिक पृष्ठभूमि प्रदान करता है। लेकिन किसी भी मामले में, इस आदमी पर राजा का 10,000 प्रतिभाएँ बकाया हैं।

अब, यदि ये सोने की प्रतिभाएँ थीं, तो यह बड़ी अतिशयोक्ति है। सोने की प्रतिभाएँ, शायद दुनिया में कोई ऐसा राज्य नहीं था जिसके पास इतनी प्रतिभाएँ थीं। हालाँकि, यह चाँदी की प्रतिभाएँ हो सकती थीं।

हेरोदेस महान का कर राजस्व लगभग 800 प्रतिभाएँ प्रति वर्ष था। अब, यह हेरोदेस महान है, जिसने लोगों पर बहुत अधिक कर लगाया और न केवल यरूशलेम में, बल्कि अन्यत्र भी बहुत सारी शानदार इमारतें बनवाईं। लेकिन उसका कर राजस्व प्रति वर्ष केवल 800 प्रतिभाएँ था।

यह 10% भी नहीं है. यह इन 10,000 प्रतिभाओं का 8% है। औसत किसान के वेतन पर 10,000 प्रतिभाएँ, लगभग 230,000 वर्षों की मज़दूरी थीं।

एक किसान को इतना कमाने में बहुत समय लगेगा। यह मानते हुए भी कि किसान को रास्ते में कुछ खाने की ज़रूरत नहीं थी। ग्रीक में 10,000 सबसे बड़ी संख्या थी, असंख्य।

जब तक आप 10,000 में से 10,000 नहीं कहना चाहते तब तक अधिक संख्या कहने का कोई तरीका नहीं था। कौन सा राजा किसी को शुरुआत में ही इतना कर्जदार होने देगा? कभी-कभी जब दृष्टांत यथार्थवाद के बंधनों को तोड़ते हैं, तो वे एक बहुत ही महत्वपूर्ण बिंदु को स्पष्ट करने के लिए ऐसा करते हैं। और निःसंदेह, यहाँ मुद्दा यह है कि हमारे पाप हमें अनंत ईश्वर के कर्जदार बना देते हैं।

इसलिए, हमारे पाप अनंत मूल्य के हैं क्योंकि वे अनंत ईश्वर के विरुद्ध हैं। और ऐसा कोई तरीका नहीं है जिससे हम कभी भी उसके लिए भुगतान कर सकें, भले ही हमारे पास अपने पापों के लिए भुगतान करने का कोई तरीका हो। और ईश्वर हमें माफ करने के लिए बाध्य नहीं है।

राजा कहता है, कर्ज चुकाने के लिए उसे और उसके परिवार को बेच दो। यहूदी शिक्षकों ने किसी के परिवार को बेचने पर रोक लगा दी, लेकिन अरे, यह यहूदी राजा नहीं है। उसे वैसे भी कोई परवाह नहीं होगी।

यदि वह आदमी बहुत महँगा गुलाम होता, तो शायद उसकी कीमत एक प्रतिभा के बराबर होती। इस आदमी को गुलाम के रूप में बेचने पर आपको यही अधिकतम राशि मिलेगी। प्रायः आपको प्रति प्रतिभा 20 दास मिलेंगे।

तो, 10,000 प्रतिभाएँ, राजा अभी भी 9,999 प्रतिभाओं की तरह बाहर होने वाला है। परिवार को इससे अधिक कुछ नहीं मिलने वाला। कुल मिलाकर परिवार संभवतः स्वयं उस व्यक्ति की तुलना में कम आय उत्पन्न करेगा।

तो, वास्तव में इसका मतलब महान गणित नहीं है। उसे बेचने से कर्ज नहीं चुकाया जा सकेगा। लेकिन फिर भी, यदि राजा वास्तव में गणित में अच्छा होता, तो वह उस व्यक्ति को शुरुआत में ही 10,000 प्रतिभाओं का कर्ज नहीं लेने देता।

लेकिन इससे राजा के बुरे मूड को इस आदमी से प्रतिशोध लेने में मदद मिल सकती है। खैर, वह आदमी श्लोक 26 में चिल्लाता है, मैं तुम्हें सब कुछ चुका दूँगा। सही।

यह संभव भी नहीं है। लेकिन राजा पद 27 में दया दिखाता है। और एक ऐसी संस्कृति में जिसने सम्मान और शर्म पर जोर दिया।

खैर, वह बहुत अच्छा था। राजा उस व्यक्ति को क्षमा करके दया की प्रतिष्ठा विकसित करेगा। परन्तु यह मनुष्य जिस पर दया होती है वह तुरन्त बाहर जाता है, और अपने एक साथी सेवक को गाली देता है।

कोई और भी राजा का सेवक है। इस दूसरे नौकर पर पहले नौकर का लगभग दस लाखवाँ हिस्सा बकाया है। अंग्रेजी में, हम कह सकते हैं कि उस पर लाखों डॉलर के बजाय 20 डॉलर का बकाया है।

खैर, वह उस आदमी का गला घोट देता है। हम प्राचीन व्यावसायिक दस्तावेज़ों से जानते हैं कि वास्तव में लेनदार कभी-कभी उन लोगों का गला घोट देते थे जिन पर उनका पैसा बकाया था ताकि उन्हें पैसा चुकाने के लिए प्रोत्साहित किया जा सके। पहला नौकर वास्तव में दूसरे नौकर को इस थोड़े से पैसे का भुगतान करने के लिए जेल में डाल देता है।

खैर, वह न केवल उस आदमी को कैद कर रहा है, बल्कि वह दूसरे आदमी को राजा को अपना कर्ज चुकाने की दिशा में काम करने से भी रोक रहा है, जो कि उसके पास हो सकता है। और बाकी नौकर इससे खुश नहीं हैं। वे कहते हैं, देखो, यह नौकर जिस पर तू ने दया की, वह हमारे सहकर्मी पर दया नहीं कर रहा।

खैर, अब राजा की दया से राजा को सम्मान नहीं मिल रहा है। अब इससे ऐसा प्रतीत होता है कि राजा भोला और मूर्ख हो गया है। ओह, मैंने इस आदमी को माफ कर दिया है और अब वह बाहर जा रहा है और लोगों का इस तरह से शोषण कर रहा है जैसा उसने नहीं किया होता अगर मैंने उसे गुलाम के रूप में बेच दिया होता।

और इसलिए, यह मेरे लिए बुरा लग रहा है। तो, उसका पहला नौकर बड़ी मुसीबत में फंस जाता है। जब तक वह सब कुछ चुका नहीं देता तब तक उसे कैद में रखा जाएगा।

लेकिन निस्संदेह, उसके पास चुकाने का कोई साधन नहीं है। उसके पास पहले से अधिक कुछ नहीं है। कोई भी दोस्त उसकी मदद नहीं करेगा।

वह राजा की कृपा से गिर गया है और उसे यातना दी जाएगी। और वह कब बाहर निकलने वाला है? खैर, उसके पास पैसे पाने का कोई साधन नहीं है। उसे हमेशा के लिए प्रताड़ित किया जाएगा।

बेशक, यह यथार्थवाद की सीमा को फिर से तोड़ देता है क्योंकि राजा लोगों पर हमेशा के लिए अत्याचार नहीं कर सकते। लेकिन यह हमें किसी और चीज़ के बारे में चेतावनी देता है। यह हमें चेतावनी देता है कि यदि हमारा ऋण ईश्वर के समक्ष अनंत है, तो इसे कभी नहीं चुकाया जाएगा।

अब कुछ लोग हैं जो कहते हैं कि यह उचित नहीं है। यदि ईश्वर प्रेम का ईश्वर है, तो वह लोगों का न्याय क्यों करेगा? इस पर इस रूप में विचार करें। हमारे पास शुरू करने के लिए जीवन नहीं होता।

हमारे पास जो कुछ भी है वह ईश्वर का उपहार है। जीवन ईश्वर का दिया हुआ एक उपहार है। जिस हवा में हम सांस लेते हैं वह ईश्वर का एक उपहार है।

हम जो भोजन खाते हैं वह ईश्वर का एक उपहार है। रिश्ते, जहां वे सकारात्मक हैं, भगवान का एक उपहार हैं। जहां वे सकारात्मक नहीं हैं, वहां कोई व्यक्ति उस तरह से व्यवहार नहीं कर रहा है जैसा भगवान ने हमें व्यवहार करने के लिए कहा है।

लेकिन सब कुछ ईश्वर की देन है। और यदि हम परमेश्वर के उपहारों को अस्वीकार करते हैं, तो उससे हमेशा के लिए अलग हो जाना हमारी पसंद है। ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि भगवान हम पर दयालु नहीं रहे हैं।

ऐसा इसलिए नहीं है क्योंकि भगवान ने हमसे प्यार नहीं किया है। तुम सदोम को देखते हो और कहते हो, परमेश्वर सदोम का न्याय कैसे कर सकता है? मेरा मतलब है, सदोम वास्तव में दुष्ट था, लेकिन आप जानते हैं, अगर भगवान ने लूट और सदोम के लोगों को बचाने के लिए अब्राम का उपयोग नहीं किया होता तो सदोम वहां होता ही नहीं। और आप जानते हैं, आप बाढ़ को देखते हैं, बाढ़ के फैसले को।

खैर, यदि परमेश्वर ने जीवन न दिया होता तो उन लोगों को आरंभिक जीवन भी नहीं मिलता। मेरा मतलब है, बाढ़ उत्पत्ति 1 में सृष्टि के कई उपहारों के उलटने की तरह है। हालाँकि, आप उस भाषा के बाकी हिस्सों को लेते हैं, यह निर्णय पर शिक्षण है। मिस्र में विपत्तियाँ, मिस्र की समृद्धि सदियों पहले जोसेफ के माध्यम से दी गई थी।

इसलिए, जब भी हम निर्णयों को देखते हैं, तो हमें यह याद रखना होगा कि निर्णय बहुत अधिक दया दिखाने के बाद ही आते हैं, जैसा कि इस मामले में है। जब लोग ईश्वर के बारे में जो कुछ भी जानते हैं उसे अस्वीकार कर देते हैं, और जब लोग अन्य लोगों के साथ हमारे व्यवहार के आधार पर अन्य लोगों में ईश्वर की छवि को अस्वीकार कर देते हैं, तो हम उसके निर्णय के योग्य होते हैं। लेकिन भगवान दयालु है।

वह माफ करने को तैयार है। वह क्षमा करने के लिए उत्सुक है। वह पापी को ढूंढने जाता है।

और अगर हम जवाब देते हैं, तो हमें उनका आशीर्वाद मिलता है। खैर, क्षमा हमें रिश्तों के दूसरे पहलू में बदलने में मदद करती है। जब हम तलाक के बारे में बात करते हैं, तो परमेश्वर के कानून में तलाक के लिए क्या आधार हैं? मार्क में, इसे थोड़ा अलग तरीके से कहा गया है, लेकिन मैथ्यू इसे फरीसियों के बीच एक बहस के लिए बहुत प्रासंगिक बनाता है जो ठीक यीशु के दिनों में हो रही थी, और जिसके साथ मैथ्यू के श्रोता मार्क के संभवतः मुख्य रूप से गैर-यहूदी श्रोताओं की तुलना में थोड़ा अधिक परिचित हो सकते हैं।

यीशु ने शिष्यों को भगवान के आदर्शों के लिए काम करने के लिए बुलाया, मैथ्यू 19, श्लोक 4 से 6। और यहां एक सिद्धांत है जो हमारे पास है, कि जैसे हम राज्य के लिए काम कर रहे हैं, ठीक है, राज्य अक्सर मानवता के लिए भगवान के मूल उद्देश्य की बहाली है। और इसलिए हम सृष्टि की ओर देखते हैं, हम देखते हैं कि भगवान का उद्देश्य क्या था, हमारे लिए भगवान की योजना क्या थी, भगवान चाहते थे कि हम एक-दूसरे के साथ कैसा व्यवहार करें, इत्यादि। और यीशु उससे अपील करते हैं।

खैर, फरीसी व्यवस्थाविवरण 24.1 को देख रहे थे, और वे उसकी व्याख्याओं पर बहस कर रहे थे। फरीसियों के दो विद्यालयों में से, प्रमुख विद्यालय शम्माइयों का विद्यालय था, हालाँकि जिन कारणों का मैंने पहले उल्लेख किया है, वे इस विशेष प्रश्न पर प्रभावी नहीं हो सकते हैं। शम्माइयों ने व्यवस्थाविवरण 24.1 की व्याख्या की, जिसमें कहा गया है कि एक आदमी अपनी पत्नी को किसी भी कारण से, अस्वच्छता के किसी भी कारण से तलाक दे सकता है।

उन्होंने अस्वच्छता शब्द पर जोर दिया और कहा कि एक आदमी बेवफाई के लिए अपनी पत्नी को तलाक दे सकता है। यदि वह अपने पति के अलावा किसी और के साथ सोती है, या यदि वह नग्न बालों के साथ सार्वजनिक रूप से बाहर जाती है, तो इसका मतलब है कि वह सोने के लिए किसी को ढूँढने की कोशिश कर रही है, भले ही वह ऐसा नहीं कर पा रही हो। हिलेलियों ने कहा कि एक आदमी अपनी पत्नी को किसी भी कारण से तलाक दे सकता है क्योंकि उन्होंने इसे किसी भी अशुद्धता या गैर-शालीनता के मामले के रूप में लिया।

उन्होंने किसी भी शब्द पर जोर दिया, ताकि एक आदमी अपनी पत्नी को किसी भी कारण से तलाक दे सके, मिश्रह गिट्टिन 910, और प्रारंभिक यहूदी साहित्य में कहीं और प्रमाणित भी किया गया है। फरीसियों के इन दो विद्यालयों की ये परंपराएँ संभवतः उस अवधि में इन दोनों विद्यालयों द्वारा कही गई बातों का सटीक रूप से प्रतिनिधित्व करती हैं। वे केवल यादृच्छिक गुण नहीं हैं, बल्कि ये उन लोगों से लिए गए हैं जो वास्तव में ज्यादातर हिलेल स्कूल के वंशज थे।

लेकिन ये दो व्याख्याएँ, एक स्पष्ट रूप से सख्त थी, एक आदमी के प्रति अधिक उदार थी, और फरीसियों ने यीशु से इस पर विचार करने के लिए कहा, अच्छा, इस प्रश्न पर आप फरीसियों के किस समूह से सहमत हैं? शुरुआत में, यीशु ने उत्पत्ति 2 की बजाय व्यवस्थाविवरण 24.1 की ओर उनकी अपील को टाल दिया। अब, सृष्टि कथा के लिए अपील करना कोई असामान्य बात नहीं थी। ऐसे अन्य लोग भी थे जो इसका महत्व समझते थे। डेड सी स्क्रॉल्स ने सृजन कथा का उपयोग किया और अपील की कि शाही बहुविवाह पर रोक लगाई जाए, यानी राजा सुलैमान की तरह कई पत्नियों से शादी करते हैं।

लेकिन व्यवस्थाविवरण 17 में यह पहले से ही निषिद्ध था, खैर, उन्होंने उत्पत्ति 2 को भी उस पर लागू किया। रब्बी अक्सर ईव कथा के आधार पर महिलाओं को अपने अधीन रखते थे। मैं उस व्याख्या से सहमत नहीं हूँ, लेकिन किसी भी मामले में, यीशु सृजन कथा के लिए अपील करते हैं, और वे पहचान सकते थे कि यह एक वैध व्याख्यात्मक दृष्टिकोण था।

इसके विपरीत, यीशु कहते हैं, ये फरीसी धर्मग्रंथ की व्याख्या इस तरह करते हैं जो दूसरों पर अन्यायपूर्वक अत्याचार करता है। आप जानते हैं, पुराने नियम के कुछ कानून, आप जानते हैं, कानून अच्छे थे, उन्होंने कई चीजों में सुधार किया, लेकिन कानून भगवान के आदर्श नहीं थे। आपको कुछ चीजों, यौन अनैतिकता, निन्दा, जादू-टोना, सब्बाथ उल्लंघन और हत्या के लिए मृत्युदंड का प्रावधान है।

ये ऐसी चीज़ें हैं जिनका परमेश्वर ने स्पष्ट रूप से विरोध किया। लेकिन अन्य चीज़ें भी थीं जहां मृत्युदंड का प्रावधान नहीं था। इसका मतलब यह नहीं था कि भगवान को इन चीज़ों की परवाह नहीं थी।

नागरिक कानून पाप को सीमित करने के लिए थे। वे पाप को खत्म नहीं करते. वे संस्कृति में मानक तो बढ़ाते हैं, लेकिन वे आपको उच्चतम आदर्श तक नहीं ले जा सकते।

तो आपके पास पुराने नियम के कानून जैसी चीज़ें थीं जो तलाक को नियंत्रित करती थीं। उन्होंने बहुविवाह को नियंत्रित किया। आप किसी महिला और उसकी बहन से शादी नहीं कर सकते।

कुछ संस्कृतियाँ इसकी अनुमति देती हैं, लेकिन लगभग आधी संस्कृतियाँ जो इसकी अनुमति देती हैं, यह बुरी तरह से काम करती हैं। बहनों के बीच अनबन हो गई, जो रेचेल और लिया के साथ हुआ। आप जानते हैं, उस संस्कृति में यह बहुत अच्छा काम नहीं करता था।

इसलिए, सोरोरिटी बहुविवाह का विनियमन था। खून का बदला लेने वाले के साथ एक नियम था, इसलिए आप यू ही किसी की हत्या नहीं कर सकते थे। उस पर सीमाएं थीं।

और दासता पर सीमाएं थीं, विशेषकर साथी इस्राएलियों के लिए जहां यह गिरमिटिया दासता थी। काम पूरा होने पर उन्हें जमीन मिल जाएगी। लेकिन पाप को नियंत्रित करना पाप को खत्म करने के समान नहीं है।

यीशु उस आदर्श, सृजन आदर्श की अपील करते हैं, जो इन चीज़ों से परे है। हम उस आदर्श से यह कहने की अपील करेंगे कि गुलामी गलत है। हम उस आदर्श के लिए अपील करेंगे कि, ठीक है, एक पति और एक पत्नी, आप जानते हैं, पूर्ण पारस्परिकता के लिए हम एक विवाह इत्यादि चाहते हैं।

खैर, तलाक के मामले में, यीशु ने कहा कि शुरुआत में विवाह के लिए भगवान का आदर्श कभी नहीं था। राज्य का उद्देश्य ईश्वर के आदर्श को पुनर्स्थापित करना है। और यीशु कहते हैं, कि तुम्हारे मन की कठोरता के कारण मूसा ने ऐसा होने दिया।

दूसरे शब्दों में, यह मानवीय कमज़ोरी के प्रति रियायत थी। खैर, रब्बियों ने स्वयं कभी-कभी माना कि कानून में चीज़ें मानवीय कमज़ोरियों के लिए रियायतें थीं। तो, उन्हें समझना चाहिए था कि वह क्या बहस कर रहे थे।

चाहे वे उससे सहमत हों या नहीं, उन्हें समझना चाहिए था कि वह टोरा से बहस कर रहा था, जैसे वे टोरा से अपनी दलीलें देने की कोशिश कर रहे थे। और वह टोरा में उनसे भी ऊंचे आदर्शों पर बहस कर रहा था। अब, जब यीशु ऐसा करता है, तो वह दिखा रहा है कि वे लोगों पर अन्यायपूर्वक अत्याचार कर रहे हैं।

मैंने संक्षेप में उस पत्नी की पिछली कहानी बताई जो रब्बियों के पास आई और उनसे विनती की, कृपया मेरे पति को मुझे तलाक न देने दें। और उन्होंने कहा, हम कुछ नहीं कर सकते। यीशु

कहते हैं कि यह दिल की कठोरता है, कि हमें अन्यायपूर्ण विश्वासघात के खिलाफ काम करना चाहिए, निश्चित रूप से विवाह अनुबंध के रूप में अंतरंग और गहराई से वादा किए गए किसी चीज़ में, जहां एक व्यक्ति को वफ़ादारी की उम्मीद करने का अधिकार है, एक व्यक्ति को उस तरह के रिश्ते में अधिकार है उम्मीद करें कि उनके साथ विश्वासघात नहीं होगा।

जब आप उस तरह की अपेक्षा नहीं रख सकते तो भरोसा कैसे बन सकता है? उस संस्कृति में, तलाकशुदा पत्नी के पास बहुत कम आर्थिक सहारा होता था। अगर उसे कोई दूसरा पति मिल जाए तो वह उसकी देखभाल कर सकता है। लेकिन अधिकांश महिलाओं के पास आत्म-सहायता के साधन नहीं थे।

उस संस्कृति में भी, तलाक की स्थिति में, विवाह के कई बच्चे पति के पास चले जाते थे। तो, इस पत्नी के साथ वास्तव में बुरा व्यवहार किया जा सकता है, और यीशु उस व्यक्ति का बचाव कर रहे हैं जिसके साथ अन्याय हुआ है। और हम जानते हैं कि कई संस्कृतियों में लोगों के साथ कई तरह से अन्याय किया जाता है।

मेरी पत्नी की संस्कृति में, अक्सर विधवाओं का फायदा उठाया जाता है, और परिवार में पति के पक्ष के रिश्तेदार संपत्ति जब्त कर लेते हैं और विधवा को सड़क पर ला देते हैं। आपके साथ और भी तरह के अन्याय हैं। और हमें उन चीजों के खिलाफ प्रचार करने की जरूरत है।

हमें यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि हमारी मंडलियों के लोग समझें कि उन्हें न्यायपूर्ण कार्य करने की आवश्यकता है। और यह चर्च के अनुशासन का मामला भी हो सकता है, क्योंकि हमारे चर्चों में हर कोई, कम से कम कई संस्कृतियों में, खासकर जहां ईसाई होना लोकप्रिय है, वास्तव में ईसाई नहीं है। किसी भी मामले में, मैथ्यू निर्दोष पक्ष के लिए एक अपवाद बनाता है।

यीशु लोगों को अन्यायपूर्वक उत्पीड़ित होने से बचा रहे थे। वह अपने शब्दों को तोड़-मरोड़ कर पेश करने का इरादा नहीं रखता था ताकि उनका इस्तेमाल उसी तरह किया जा सके जैसे मूसा के कानून का इस्तेमाल निर्दोषों पर अत्याचार करने के लिए किया जाता था। मैथ्यू पति को संबोधित कर रहा है।

मार्क में, इसे दोनों तरीकों से रखा गया है, लेकिन मैथ्यू पति को संबोधित करता है क्योंकि फिलिस्तीनी यहूदी कानून में, जो यहूदिया और गलील में प्रचलित था, वास्तव में केवल पति ही कानूनी रूप से तलाक दे सकता था। अब, वह फरीसियों के बीच था। यदि आपके पास पर्याप्त पैसा होता, तो आप उससे छुटकारा पा सकते थे।

लेकिन सामान्य परिस्थितियों में तलाक का अधिकार पति को ही था। यही एकमात्र चीज़ थी जिसे व्यवस्थाविवरण 24 में संबोधित किया गया था, क्योंकि यही संस्कृति थी। लेकिन यीशु ने एक अपवाद सूचीबद्ध किया है।

वह कहते हैं, बेवफाई के कारण को छोड़कर, जो कुछ ऐसा था जो पत्नी अपने पति के साथ कर सकती थी। प्राचीन विश्व में यह एक कानूनी आरोप था। कुछ लोगों ने इसे संक्षिप्त करके यह कहने का प्रयास किया है कि यह केवल अनाचारपूर्ण विवाह की बात कर रहा है।

यदि आपकी शादी आपकी बहन से हुई है, तो यह एक अपवाद है, क्योंकि मिस्र में कभी-कभी भाई-बहन भी शादी कर लेते हैं। यूनानियों ने आपकी सौतेली बहन के लिए इसकी अनुमति दी थी। यहूदी लोगों ने भी इसकी इजाजत नहीं दी।

इसकी बहुत अधिक संभावना नहीं है कि यीशु ने उस पर ध्यान दिया होगा। साथ ही, इसकी बहुत अधिक संभावना नहीं है कि यह यहीं तक सीमित रहे। पोर्निया का मतलब हर तरह की चीजें हैं।

इसका मतलब यह है कि केवल बहुत, बहुत, बहुत ही दुर्लभ परिस्थितियों में जहां संदर्भ विशेष रूप से इसे निर्दिष्ट करता है। कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, यह विवाह पूर्व यौन संबंधों की केवल विवाहोपरान्त खोज है क्योंकि वह मोर्चिया का उपयोग नहीं करता है। वह व्यभिचार का प्रयोग नहीं करता।

वह पोर्निया का इस्तेमाल करता है . लेकिन पोर्निया मोर्चिया से छोटा शब्द नहीं था। यह मोर्चा से अधिक व्यापक शब्द था।

इसमें व्यभिचार भी शामिल था. व्यभिचार के लिए तलाक अनिवार्य था। तो ऐसा होने वाला था.

लेकिन एक वैध तलाक, परिभाषा के अनुसार, पुनर्विवाह की अनुमति देता है। तो, सवाल तलाक की वैधता का था। यदि यीशु कहते हैं कि आपको जीवनसाथी की बेवफाई के अलावा किसी अन्य कारण से तलाक लेने की अनुमति नहीं है, तो यह एक वैध अपवाद है।

अब, मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि यदि जीवनसाथी बेवफा है, तो आप माफ नहीं कर सकते। हमने सिर्फ क्षमा को देखा। मैं यह नहीं कह रहा कि शादी तोड़नी होगी।

यहूदी कानून के तहत यह अपेक्षित था। रोमन कानून के तहत यह अपेक्षित था। लेकिन ईसाई होने के नाते, हम क्षमा कर सकते हैं।

हम प्यार कर सकते हैं. लेकिन माफ़ करना और उस व्यक्ति को वापस आने के लिए मजबूर करने में अंतर है जो वापस नहीं आना चाहता। यदि वह व्यक्ति चला जाता है, तो हम उसे रुकने के लिए बाध्य नहीं कर सकते।

तो, इनमें से कुछ चीजें एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में बिल्कुल अलग-अलग होंगी कि वे कैसे काम करती हैं। लेकिन वह निर्दोष पार्टी के लिए एक अपवाद बनाता है। लेकिन फिर, क्षमा एक ईसाई गुण है जहां विवाह को बहाल करना संभव है।

हम ऐसा करना चाहते हैं. खैर, शिष्य कहते हैं, अरे, यह अच्छा विचार नहीं है। क्योंकि देखिए, अगर कोई आदमी अपनी पत्नी को तलाक नहीं दे सकता, तो शायद शुरुआत में शादी न करना ही बेहतर होगा।

क्योंकि फिर, उस समय शादियाँ आम तौर पर माता-पिता द्वारा तय की जाती थीं। और इसका मतलब यह नहीं था कि बच्चों का इसमें कोई इनपुट या कोई कहना नहीं था, खासकर आदमी का। महिला, यह उसकी उम्र पर निर्भर करेगा।

यदि यह दूसरी शादी होती, तो निस्संदेह, उसके पास बहुत सारे इनपुट होते। लेकिन जब वे अभी भी छोटे थे, तो आम तौर पर माता-पिता ही शादी की व्यवस्था करने में मुख्य भूमिका निभाते थे। और उन्होंने कहा, ठीक है, अगर हमारे पास भागने का कोई प्रावधान नहीं है, अगर हम शादी को खत्म नहीं कर सकते हैं अगर यह सही तरीके से काम नहीं करती है, अगर हमें यह जिस तरह से चल रहा है वह पसंद नहीं है, तो शादी न करना ही बेहतर है।

क्योंकि कुछ लोग वास्तव में कठिन परिस्थितियों में फंसने वाले हैं। यीशु ने कहा, ठीक है, कुछ लोगों के लिए अकेले रहना ही बेहतर है। कुछ लोगों के लिए शादी न करना ही बेहतर है।

संभवतः यह स्वयं यीशु के बारे में सच था। मेरा मतलब है, आप खामोशी से कोई तर्क नहीं कर सकते। लेकिन मौन से कुछ तर्क दूसरों की तुलना में अधिक सम्मोहक होते हैं।

निश्चित रूप से यदि यीशु विवाहित होता, तो सुसमाचार में इसका कुछ उल्लेख होता। मेरा मतलब है, जॉन बैपटिस्ट, फिर से, शायद उसकी पत्नी उसके साथ जंगल में नहीं रह रही है। यह उस प्रकार की बात होगी जिसका प्राचीन स्रोत आमतौर पर उल्लेख करते हैं।

तो, कुछ लोग सिंगल थे। लेकिन यीशु इसे संप्रेषित करने के लिए एक बहुत ही चौकाने वाला तरीका अपनाते हैं। ध्यान रखें कि यहूदी शिक्षक फलदायी होने और आदेश को बढ़ाने पर विचार करते थे।

और इसलिए, उनमें से कुछ ने कहा, ठीक है, आप जानते हैं, अगर किसी आदमी की शादी 18 या 20 साल की उम्र तक नहीं हुई है, तो वह हत्यारे के समान है क्योंकि वह फलदायी नहीं हो रहा है और भगवान की छवि को बढ़ा नहीं रहा है। और एक रब्बी उस पर व्याख्यान दे रहा था। और दूसरे रब्बी ने उसे बीच में ही डाँटकर कहा, हे कपटी, तू ने ब्याह नहीं किया।

उन्होंने कहा कि मैं इसमें कुछ नहीं कर सकता। मुझे यह अध्ययन टोरा बहुत पसंद है। मेरे पास शादी करने का समय नहीं है।

लेकिन वास्तव में, अधिकांश रब्बी इससे सहमत नहीं होंगे। अधिकांश रब्बियों ने कहा, ठीक है, एक रब्बी की तरह, उन्होंने कहा, आपने टोरा की इतनी अधिक शिक्षा कैसे प्राप्त की? उन्होंने कहा कि मेरी शादी 16 साल की उम्र में हो गई, इसलिए मैं पहले ही व्याकुलता से मुक्त हो गई।

ऐसा माना जाता था, कि कई रब्बी विवाह को यौन प्रलोभन से मुक्त करने और इस प्रकार व्याकुलता से मुक्त मानते थे। लेकिन किसी भी मामले में, यीशु इसे बहुत ही चौकाने वाले तरीके से कहते हैं। कुछ लोगों के लिए अकेले रहना ही बेहतर होता है और वह किन्नर होने की छवि का इस्तेमाल करते हैं।

अब शाही दरबारों में, किन्नरों को कुछ उच्च दर्जा प्राप्त हो सकता है, लेकिन अधिकांश लोग, जब उन्होंने किन्नरों के बारे में सोचा, तो सकारात्मक नहीं थे। और यहां तक कि शाही दरबार में मौजूद लोगों के लिए भी, मेरा मतलब है, आप शाही दरबार में किसी के खिलाफ बोलना नहीं चाहेंगे, लेकिन भूमध्यसागरीय दुनिया में, जब लोग किन्नरों के बारे में बात करते थे, तो वे अक्सर आधे आदमी के रूप में उनका मजाक उड़ाते थे। उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता था।

और यहूदी धर्म में, यह एक भयानक बात थी। तल्मूड कुछ अकल्पनीय होने की बात करता है कि जब कोई खतना कर रहा होता है, तो गलती से उसकी अपेक्षा से अधिक काट दिया जाता है। व्यवस्थाविवरण 23:1 के अनुसार, एक नपुंसक, एक बधिया पुरुष, इस्राएल की मंडली में प्रवेश नहीं कर सकता था।

और मुझे लगता है कि भगवान ने वह नियम इसलिए बनाया ताकि वे लोगों को नपुंसक न बनाएं, जैसा कि कुछ अन्य संस्कृतियों ने किया। वे लोगों को बधिया नहीं करेंगे। लेकिन यीशु कहते हैं, ऐसे लोग भी हैं जो जन्मजात नपुंसक होते हैं।

यह सच है। लोग बिना अंग के पैदा होते हैं। कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जिन्हें दूसरे लोग नपुंसक बना देते हैं।

यहूदी लोग इसके बारे में अन्य संस्कृतियों में जानते थे। उदाहरण के लिए, वे फारस में इसके बारे में जानते थे। और कुछ ऐसे भी हैं जो स्वर्ग के राज्य के लिये अपने आप को नपुंसक बनाते हैं।

खैर, जैसा कि कहानी कहती है, उत्पत्ति ने इसे शाब्दिक रूप से लिया, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया था। लेकिन यह अतिशयोक्ति है। यह मुद्दे को स्पष्ट करने का एक ग्राफिक तरीका है।

और यह निश्चित रूप से काफी ग्राफिक था, क्योंकि यहूदी लोगों के लिए, यह एक बहुत ही भयानक छवि थी। लेकिन बात यह है कि कुछ लोग राज्य की खातिर अकेले रहते हैं। जॉन द बैपटिस्ट ने यह किया।

यीशु ने यह किया। और मुझे लगता है कि हम काफी हद तक निश्चितता के साथ कह सकते हैं कि पॉल ने ऐसा किया। कुछ लोग कहते हैं, ठीक है, नहीं, महासभा का सदस्य बनने के लिए पॉल का विवाह अवश्य हुआ होगा।

लेकिन पॉल लगभग निश्चित रूप से महासभा का सदस्य नहीं था। वह एक युवा व्यक्ति था जब वह आस्तिक बन गया। और प्रेरितों के काम 26:10, जिसे सैन्हेद्रिन का सदस्य होने के समर्थन में उद्धृत किया गया है, कि उन्होंने अपना वोट डाला था, प्राचीन स्रोतों में अक्सर आलंकारिक भाषा थी, जिसका सीधा सा मतलब था कि उन्होंने निर्णय को मंजूरी दे दी थी।

और यह शब्दों का खेल भी है क्योंकि वस्तुतः वोट डालना भी एक कंकड़ डालना है। जब अन्य लोग पथराव कर रहे थे, स्टीफन ने कोई पत्थर नहीं फेंका, बल्कि उसने अपना कंकड़ इस अर्थ में

फेंका कि वह जो किया गया था उसका अनुमोदन कर रहा था। और यीशु परिवार के बारे में और अधिक बात करने लगे।

मैथ्यू 19 में, श्लोक 13 से 15, बच्चों के बारे में बात करता है। खैर, शिष्य बच्चों को दूर धकेलने की कोशिश करते हैं। माता-पिता अपने छोटे बच्चों को यीशु के पास ला रहे हैं ताकि वे उन्हें आशीर्वाद दें।

और, आप जानते हैं, आशीर्वाद, ठीक है, आप जानते हैं, इसहाक ने याकूब को आशीर्वाद दिया, इब्राहीम ने इसहाक को आशीर्वाद दिया। ये माता-पिता चाहते हैं कि यीशु उनके बच्चों को आशीर्वाद दें। और शिष्य उन्हें दूर धकेलने का प्रयास करते हैं क्योंकि शिष्य राज्य के महत्वपूर्ण व्यवसाय के बारे में हैं।

आप जानते हैं, शिष्य यरूशलेम की ओर जा रहे हैं। यीशु अपना राज्य स्थापित करने जा रहा है। वह महत्वपूर्ण है।

और वे भूल जाते हैं कि राज्य वास्तव में किस बारे में है। यह उस भीड़ की तरह है जिसने अध्याय 20 और श्लोक 31 में अंधों को यीशु तक पहुंचने से रोकने के लिए उन्हें चुप कराने की कोशिश की थी। अरे, यीशु के पास और भी महत्वपूर्ण चीज़ें हैं।

वह राज्य स्थापित करने के लिए यरूशलेम जा रहा है। यह 2 राजा 4.27 को प्रतिध्वनित करता है, जहां गेहजी ने शुनेमिन महिला को एलीशा से दूर धकेलने की कोशिश की थी। परन्तु एलीशा कहता है, नहीं, उसे अकेला रहने दो।

और उसकी प्रार्थना सुन ली गयी। खैर, इस मामले में, शिष्य यीशु की रक्षा करने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन यीशु के राज्य का उद्देश्य सद्कियों को उखाड़ फेंकना या रोमनों का वध करना नहीं था।

यीशु के राज्य का उद्देश्य कुछ बच्चों के लिए रुकना, बच्चों को आशीर्वाद देना और अंधे भिखारियों की जरूरतों को पूरा करना था। यीशु ने छोटे लोगों की परवाह की, हाशिये पर पड़े लोगों की परवाह की। और अगर हम उसके दिल के करीब रहना चाहते हैं, तो हमें भी इसी बात का ध्यान रखना होगा।

यदि हम ऐसे ही हैं, तो मुझे आशा है कि यह काफी आसान हो जाएगा। यदि हम ऐसे नहीं हैं, तो हम दीन लोगों के बीच और टूटे हुए लोगों के बीच भी उसके हृदय को सबसे अच्छे से जान सकते हैं। वह इस बारे में और अधिक बात करने जा रहा है कि शिष्यत्व की कीमत पर उसका अनुसरण करने का क्या मतलब है।

यह अमीर और शक्तिशाली होना नहीं है। यह गरीबों और वंचितों की देखभाल कर रहा है। हम इसके बारे में अगले पाठ में बात करेंगे।

यह मैथ्यू की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह मैथ्यू 16-19 पर सत्र 14 है।